7

यीशु में शिष्य का जीवन

(यूहन्ना 15)

''सच्ची दाखलता मैं हूं; और मेरा पिता किसान है। जो डाली मुझ में है, और नहीं फलती, उसे वह काट डालता है, और जो फलती है, उसे छांटता है ताकि और फले। तुम तो उस वचन के कारण जो मैं ने तुम से कहा है, शुद्ध हो। तुम मुझ में बने रहो, और मैं तुम मैं: जैसे डाली यदि दाखलता में बनी न रहे, तो अपने आप से नहीं फल सकती, वैसे ही तुम भी यदि मुझ में बने न रहो तो नहीं फल सकती। मैं दाखलता हूं: तुम डालियां हो; जो मुझ में बना रहता है, और मैं उस में, वह बहुत फल फलता है, क्योंकि मुझ से अलग होकर तुम कुछ नहीं कर सकते। यदि कोई मुझ में बना रहे, तो वह डाली की नाईं फेंक दिया जाता, और सूख जाता है; और लोग उन्हें बटोरकर आग में झोंक देते हैं, और वे जल जाती हैं'' (आयतें 1-6)।

अपने जाने के लिए अपने प्रेरितों को तैयार करते हुए यीशु ने उन्हें बताया कि उसकी अनुपस्थिति में आत्मिक जीवन को कैसे बनाए रखा जा सकता है। उसने दाखलता और इसकी टहनियों के रूपक का इस्तेमाल करते हुए यह निर्णायक सच्चाई बताई। उसने अपने पिता को किसान या माली के रूप में, अपने आपको दाखलता के रूप में और प्रत्येक चेले को दाखलता से जुड़ी टहनी के रूप में दिखाया। इस रूपक में पाया जाने वाला मुख्य विचार जीवनदायक सम्बन्ध है जो अन्य किसी भी सम्बन्ध से बढ़कर है। यह पिता, पुत्र और चेले का त्रिपक्षीय सम्बन्ध है।

हमारे लिए यीशु के शब्दों को समझना उतना ही आवश्यक है जितना प्रेरितों के लिए उन्हें समझना आवश्यक था। यीशु बता रहा था कि उसके पिता के दाहिने हाथ बैठ जाने के बाद इस संसार में आत्मिक जीवन कैसा हो सकता था। प्रेरितों के पास यीशु की व्यक्तिगत उपस्थिति नहीं होनी थी, पर वे जीवन रक्षक ढंग से उसके साथ जुड़े होने थे। आज मसीह के लिए जीते हुए हमें उसमें और उसके द्वारा रहना आवश्यक है जैसे टहनी दाखलता में और उसके द्वारा जीवित होती है।

आवश्यक सम्बन्ध

यह सम्बन्ध जो चेले का यीशु के साथ है बड़ा ही आवश्यक सम्बन्ध है। यीशु ने अपने आपको दाखलता बताया और घोषणा की कि जब तक हम उससे जीवन पाने के लिए दाखलता की टहनी की तरह उससे जुड़ते नहीं हैं तब तक हम किसी प्रकार का आत्मिक जीवन नहीं पा सकते। उसने कहा, ''सच्ची दाखलता मैं हूं और मेरा पिता किसान है'' (15:1)। बाद में उसने कहा, ''यदि कोई मुझ में बना रहे, तो वह डाली की नाईं फेंक दिया जाता, और सूख जाता है; और लोग उन्हें बटोरकर आग में झोंक देते हैं, और वे जल जाती हैं'' (15:6)।

इस रूपक को ध्यान में रखते हुए, मसीही जीवन का आरम्भ तब होता है जब व्यक्ति सच्ची दाखलता की टहनी बन जाता है यानी वह मसीही बन जाता है। उद्धार प्राप्त करने के लिए इस प्रकार से विश्वास करना, मन फिराव, अंगीकार और बपतिस्मा शामिल हैं कि हम उस दाखलता के भाग बन जाते हैं। एक अलग आकृति का इस्तेमाल करते हुए पौलुस ने कहा, ''और तुम में से जितनों ने मसीह में बपतिस्मा लिया है, उन्होंने मसीह को पहन लिया है'' (गलातियों 3:27)। उसने कहा कि बपतिस्मे के संग हम मसीह में प्रवेश करते और उसके साथ लपेटे जाते या पहनाए जाते हैं। दाखलता की टहनियों की तरह, मसीह में बने रहने और उससे जीवन पाने में हमें मसीह के साथ एक नया जीवन मिलता है जो बढ़ता, फूलता और फलता है। हम मसीह के साथ एक नई एकता में प्रवेश करते और उस एकता में बने रहते हैं। कोई टहनी दाखलता से अलग रहकर जीवित नहीं रह सकती, और न ही मसीही जीवन मसीह से अलग रहकर हो सकता है।

बना रहने वाला सम्बन्ध

यीशु के साथ हमारा सम्बन्ध एक बना रहने वाला सम्बन्ध है। यीशु ने कहा, ''मैं दाखलता हूं: तुम डालियां हो; जो मुझ में बना रहता है, और मैं उस में, वह बहुत फल फलता है, क्योंकि मुझ से अलग होकर तुम कुछ नहीं कर सकते'' (15:5)। यहां इस्तेमाल शब्द ''बना'' निरन्तरता को दिखाता है। उसके साथ हमारा यह सम्बन्ध पक्का, प्रतिदिन का और बढ़ता रहने वाला है।

खाना खाए बिना व्यक्ति मर जाएगा यदि डॉक्टर उसे नली के द्वारा खाना खिलाकर जीवित न रखे। खाने के बिना कोई व्यक्ति जीवित नहीं रह सकता और मसीह की ईश्वरीय ऊर्जा के बिना कोई मसीही जीवित नहीं हर सकता। यीशु के साथ हमारा सम्बन्ध यीशु के साथ हमारे बातें करने, यीशु के द्वारा प्रार्थना करने, यीशु के वचन को खाने और उसकी समानता में बनने से बना रहता है।

उपजाऊ सम्बन्ध

हमारे अन्दर मसीह का जीवन होने का अर्थ है कि उसके साथ हमारा सम्बन्ध उपजाऊ होगा। यीशु ने कहा, ''तुम मुझ में बने रहो, और मैं तुम में। जैसे डाली यदि दाखलता में बनी न रहे, तो अपने आप से नहीं फल सकती, वैसे ही तुम भी यदि मुझ में बने न रहो तो नहीं फल सकते'' (15:4)। हमारे अन्दर इस ईश्वरीय ऊर्जा के जाने से हमें इसका कुछ करना आवश्यक है। या तो हम इसे मानकर इसे हमारे अन्दर वह उपजाने देंगे जो मसीह का जीवन उपजाता है अर्थात आत्मिक जीवन, उसकी समानता में बढ़ना, उसके जैसा प्रेम और उसकी तरह सेवा करने की लगन–नहीं तो हम आत्मिक रूप में मर जाते हैं। डब्ल्यू. ग्राहम स्क्रोजी ने लिखा है:

> दो बातें आनी चाहिए: पहले यह कि जहां जीवन नहीं है वहां कोई फल नहीं हो सकता;
> और दूसरा, जहां जीवन है वहां कुछ न कुछ फल होता ही है।[1]

यीशु ने यह भी कहा, ''जो डाली मुझ में है, और नहीं फलती, उसे वह काट डालता है, और जो फलती है, उसे छांटता है ताकि और फले'' (15:2)। हो सकता है कि हम दाखलता से जुड़े हों पर उस आत्मिक जीवन का जो हमें दाखलता से मिलता है सही उपयोग न करें। हम इसे वैसे ही छुपा सकते हैं जैसे हम आत्मा को बुझा सकते हैं क्यों वह वचन के द्वारा हमारी अगुआई करता है।

अपने आपको उसके रूप में अधिक से अधिक डालते हुए जब हम मसीह की ईश्वरीय ऊर्जा को मान लेते और इसे अपने अन्दर काम करने देते हैं तो हमें पिता की ओर से प्रोत्साहन मिलता है ताकि हम और तेज़ी से बढ़ सकें। कई बार वह हमें छांटता है ताकि पुत्र का जीवन हम में और भरपूरी के साथ फैल जाए। प्रेरितों को हाल ही में यीशु की प्रेरणा के द्वारा छांटा गया था। उसने उन्हें बताया कि ''तुम उस वचन के कारण जो मैंने तुम से कहा है, शुद्ध हो'' (15:3)। इसी प्रकार से हमारा पिता वचन के द्वारा हमारी छटाई करके हमारे मनों में और तेज़ धार वाली सामर्थ देकर हमारे मनों को नया बनाने का काम करता है।

सारांश

इसका अर्थ यह है कि यीशु न केवल हमारी आशा, हमारा नमूना, हमारा कप्तान, हमारा उद्धारकर्त्ता और हमारा प्रभु है बल्कि वह हमारा जीवन भी है। उसके बिना हमारे पास कुछ नहीं है, उसके बिना हम कुछ कर नहीं सकते और उसके बिना हम कुछ नहीं हैं। उसके साथ हमारा जीवन में सर्वश्रेष्ठ सम्बन्ध मिलता है जो इस संसार में हमारे पास है, यानी हमें उपजाऊ और परमेश्वर को महिमा दिलाने वाला बनाने वाला सम्बन्ध आवश्यक और निरन्तर है।

''और सब कुछ उसके पांवों तले कर दिया: और उसे सब वस्तुओं पर शिरोमणि ठहराकर कलीसिया को दे दिया। यह उसकी देह है, और उसी की परिपूर्णता है, जो सब में सब कुछ पूर्ण करता है'' (इफिसियों 1:22, 23)।

''क्योंकि उस में ईश्वरत्व की सारी परिपूर्णता सदेह वास करती है। और तुम उसी में भरपूर हो गए हो जो सारी प्रधानता और अधिकार का शिरोमणि है'' (कुलुस्सियों 2:9, 10)।

टिप्पणी

[1]डब्ल्यू. ग्राहम स्क्रोजी, द *गॉसपल ऑफ़ जॉन,* स्टडी अवर कमैंट्रीज़ (ग्रैंड रैपिडश, मिशिगन: ज़ौन्डर्वन पब्लिशिंग हाउस, 1976), 101.